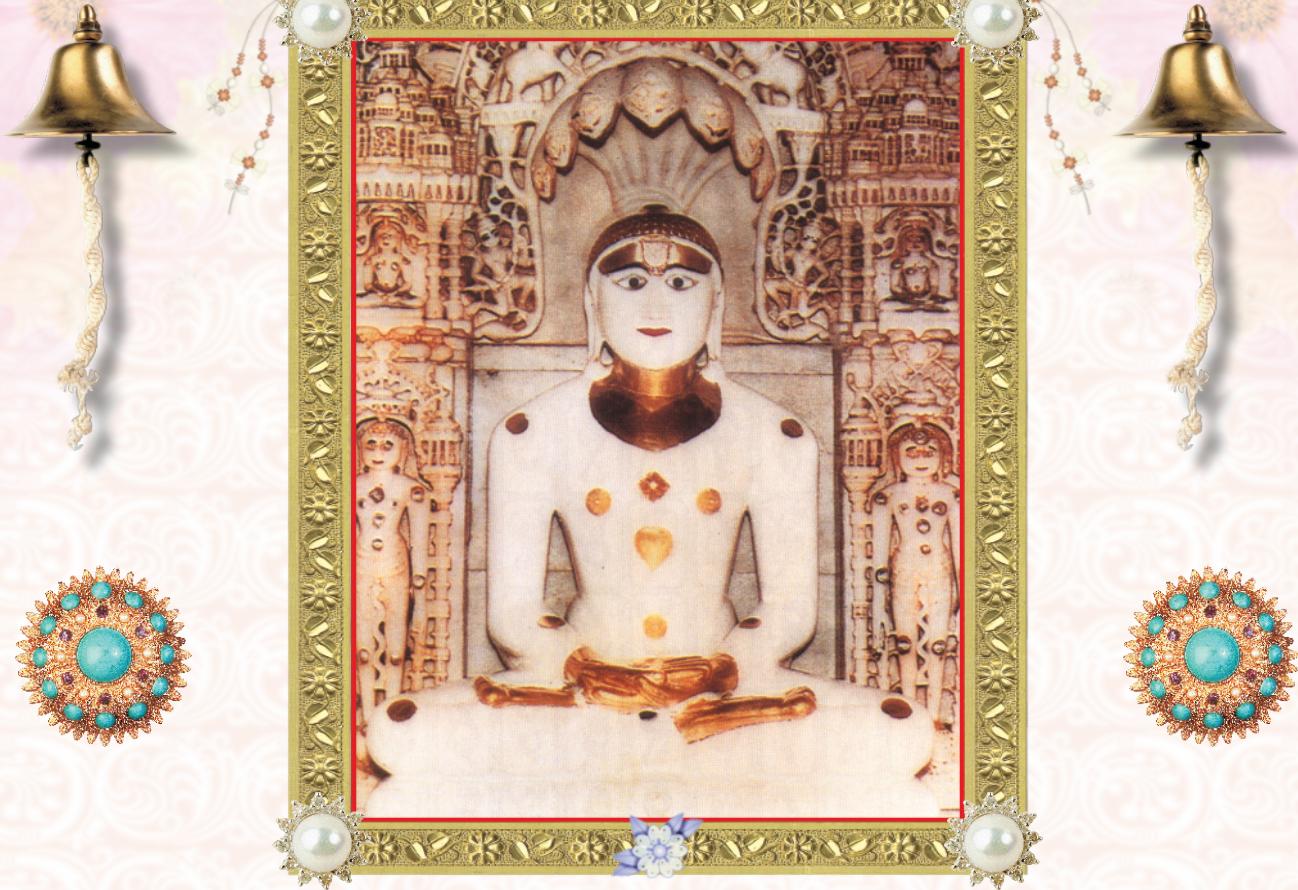


# શ્રી પાર્શ્વબાય ચાલીશ



ॐ હ્રી શ્રી ધરણોન્દ્ર પદ્માવતી પરિપૂર્જતાય શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથાય નમઃ

## ચોપાઈ

પારસ પ્રભુ કા કીજિયે, નિત પ્રતિ પાવન પાઠ;  
પદ-પદ સંપદ શાંતિ કા, લગ જાયેગા ઠાઠ !  
પારસ ચાલીસા પટો, બટો સત્ય કે સાથ;  
મંગાલમય હો પ્રતિક્ષણા, સંદ્યા ઓર પ્રભાત ॥



જ્યુ જ્યુ ત્રિભુવન તારુક સ્વામી,  
જ્યુ જગદીશ્વર જગદીનંદન,  
પ્રભુ તુમ હો અધ્યાત્મ ઉજાગર,  
વારાણસી કી ધન્ય ધરા પર,  
નિરખ ચતુર્દશ સ્વામ શુભંકર,  
પૌષ કૃષ્ણ દશમી તિથિ ધન્યા,  
આયે ચોસાઈ ઈન્દ્ર મેરુ પર,  
મિલ જુલ ઉત્સવ લગે મનાને,  
નીલકમલ સુભ છબી મન ભાની,  
તન મન મેં કુલી ના સમાઈ,

પાર્શ્વનાથ પ્રભુ અંતરુધ્યામી... ૧  
સુર નાર વંદિત વામાનંદજ... ૨  
દિનાંધુ કરુણા કે સાગાર... ૩  
હુએ ચ્યાવિત પ્રભુ જબ આકર... ૪  
પુલક ઉઠી માં વામા સહિત... ૫  
પા પ્રભુ જન્મ હુઈ હૃત પુણ્યા... ૬  
શકુંદ લે ગયે ઉંડે વહોં પર... ૭  
ગાતો હુએ માંગલિક ગાજો... ૮  
દેખુ તજુજ કી વામા ચાની... ૯  
સુય મેં અતુલ દિવ્ય નિધિ પાઈ... ૧૦



तुम हो ग्राता भाष्य विधाता,  
 महिमा अमित अयिंत्य तुम्हारी,  
 अशरण शरण तरण तारण तुम,  
 प्रतिपद ध्यान तुम्हारा ध्यावुं,  
 उक्खवल मनवांछित फल पाउं,  
 उँ हौं श्री कुलौं ब्लौं अहुं,  
 शास शास के साथ विभल मज़,  
 पुष्ये पञ्चावती पवित्रो,  
 मनोरथम् भम पूर्य पूर्य,  
 उँ हौं हौं हूँ हैं हौं सत्वर,  
 हुष्यान् धृष्यान् वार्य वार्य,  
 कुकुकु शांति तुष्टि पुष्टि,  
 स्वार्थ्यं वर्धय शक्ति वर्धय,  
 नमो तीर्थनाथाय जिनपते,  
 शिन्तामात्ये सुर वृक्षाय,  
 और ना कुछ भी घ्यासु हमें,  
 निर्मल नित्य नवीन रहुं मैं,  
 नाग नागिनी को भधुर स्वर,  
 भव सागर से पार किया है,  
 उँ करते हे प्रभुपद की सेवा,  
 प्रभु भक्तों के कष्ट मिटाते,  
 प्रभुने जब संयम अपनाया,  
 निर्जन गहन विपिन में जाकर,  
 आया वहाँ धीठ कमठासुर,  
 आये जट धरणों वहाँ पर,  
 सात झण का दृप बनाकर,  
 पञ्चावती पञ्चिनी बनकर,  
 प्रभु को चाग न रोष किसी पर,  
 तुम ही हो प्रभु जगहालंभन,  
 नर और नारी सभी गुण गाये,

सुख सौभाग्य सुभाति के ढाता... ११  
 ग्राते सुर सुरपति नर नारी... १२  
 शाश्वत शिवपथ के कृश्चित तुम... १३  
 शुभ मनु चरण शरण मैं आउं... १४  
 मानव गुवन धन्य भजाउं... १५  
 अष्टाक्षरी भंत्रा अतिउत्तम... १६  
 अजपाज्ञा सिद्धि सुख साधन... १७  
 श्री वैशाखो यारु चहिंते... १८  
 शिंतां धाधां चूर्य चूर्य... १९  
 आधि व्याधि विषदा हर हर... २०  
 सुख सातां प्रभुतां विक्तार्याय... २१  
 पुष्य प्रपूर्णां अभूतां वृष्टि... २२  
 शक्ति वर्धय सिद्धि वर्धय... २३  
 नमो पार्थ्यनाथाय भुगवते... २४  
 भंगलाय भज कुल्याशाय... २५  
 जगे आत्मविश्वास देहय मैं... २६  
 प्रभु चरणों मैं लीन रहुं मैं... २७  
 भाषुभंत्रा गुवक्कर सुनाकर... २८  
 उजका जन्म सुधार छिया है... २९  
 बांट रहे नित भंगला भैवा... ३०  
 शिद्धि-सिद्धि सुख शांति भगते... ३१  
 तरुणिमा तीव्र तपोव्रत हाया... ३२  
 धृते शुक्ल ध्यान लगाकर... ३३  
 करने लगा उपद्रव हुक्कर... ३४  
 ढे वी पञ्चावती ढोडकर... ३५  
 किया धन्त्रा प्रभु के भजता क पर... ३६  
 उठा दिया प्रभुवर को उपर... ३७  
 हे सुख पर सुभद्रष्टि शुभंकर... ३८  
 निर्भल के बल निर्धन के धन... ३९  
 शक्ति सैवा जपु शल पाये... ४०

छिवसमां औछामां औछो औक वधता आ श्री पार्थ्यनाथ यातीसाजो जप  
 चित्तनी औकाग्रता साथे अने जड़ी शुद्धिपूर्वक करवो.  
 कुपा करीने आ साहित्यनी आशातना न थाय तेनु ध्यान चाखजो.